अणबाँच्या आँखर

•

रचयिता :
रघुराजसिंह हाडा

•

प्रथम संस्करण
१९७०

•

मूल्य—दो रुपये पचास पैसे

•

प्रकाशक :
अर्चना प्रकाशन
१, मेहरा हाउस, कालावाग
अजमेर (राजस्थान)

मुद्रक :
प्रिण्ट हाउस,
बाबू मोहल्ला,
अजमेर

अरपण !

वां सब्याण ई जे धरती 'र आसः...
का अणबांच्या आंखर बांच'
अर पसीना सूं—
अणलिख्या आंखर
लिखऽ

—रघुराज

म्हूं

चड़ीचुप हो जाऊं छूं। मैं नैं तो ये गीत घणा गाया। थां नैं सुण्या
अर सराया भी। अब थां गावो। थां हैं रुच्या तो म्हूं
जाणूं गो क' माता शारदा हैं जे पूजा का पुसब में नैं
चढाया छा वां में सांची सोरम छी। अगर न'
रुच'तो में हैं माता सूं बिनती करबा
द्यो क' आग' अस्यो लिखूं
जस्यो थां हैं रुचऽ।

घणां दना सूं या हैंस मन छी क' बोली का बोल कोरा सुणबा
काई न' गुणबा का भी लाग', बांचबा का भी लाग, समझबा
सोचबा जस्या भी लाग'। म्हूं या न' कह सकूं क' ये ही
व' आंतर छ' जे अणबांच्या छा, अर बांचबा जोग ही
छऽ। पण बोल्यां बगाल कोई न', ये बोल अलाईं
सोतसा होव', आंतर अलाईं टूट्या फूट्या
होवऽ। हाडोती-बोली की आटी सू या
बात थां पसां हैं पड़ 'र गल' उतर
सक' तो म्हारो बड़ो भाग छऽ !

प्रकाशकीय निवेदन

हाड़ौती बोली है। बोली में सुर के आरोह अवरोह से अर्थ में बड़ा परिवर्तन हो जाता है। जैसा बोला जाता है वैसा लिखना बड़ा कठिन है। फिर भी लेखक ने कुछ स्वर-चिह्न लगाकर बोली के सही उच्चारण को लिपि-बद्ध करने की चेष्टा की है। उन स्वर-चिह्नों को यथावत् रख कर हमने प्रकाशकीय दायित्व निभाया है। फिर भी उच्चारण में त्रुटि दिखाई दे तो सुझाव आमंत्रित है। अगले संस्करण में उन पर विचार किया जा सकेगा।

पाठ में, दो स्वर-चिह्न प्रयुक्त हुए है—अवग्रह (ऽ) और ऊर्ध्वविराम (')। अवग्रह, वाक्य के अन्तिम अक्षर के प्रलम्बित या स्वरित हो जाने का सूचक है यथा—

पूरब आडी गैल छऽ।

ऊर्ध्वविराम अक्षर के पहले आने पर अक्षर-लोप का सूचक है और पीछे प्रयुक्त होने पर अक्षर के प्रलम्बित या स्वरित हो जाने का। उदाहरण देखकर समझ लेने पर आगे चतुष्पदियों का सही पाठ करके अर्थाधिगम करने मे कठिनाई नही होगी।

(१) खाल=चमडी
खाल'=खाले

(२) बता'र=बता कर
बतार'=बतारे !

(३) आवतो=बकाया
आव'तो=आवे तो

अनुक्रमणिका

१.	[illegible]	....	....	९
२	गीत	....	...	११
३.	धरती मूं	...	....	१३
४.	गीत	....	..	१४
५.	बहुतरां की जोड़ी	....	....	१५
६	गीत	....	....	१७
७.	तू अर मूं	..	....	१८
८	गीत	...	...	१९
९.	आसू अर गुलाब	...	....	२१
१०	गजल	....	....	२३
११	मुजरो	....	...	२५
१२	आग अर पाणी	....	....	२६
१३.	हेलो	....	....	२८
१४.	गीत	...	....	३०
१५.	राखी	....	....	३२
१६.	विजैदसमी	....	....	३४
१७.	चालां चम्बल कराड'	....	....	३५

१९. चीरा ३
२०. वीर की विदा ४
२१ क्यूँ नी आवो ए ? ४३
२२. बोलियाँ को ओळमो ४६
२३. गीत ४८
२४. गगोल्या ५०
२५. पधरावणी ५२
२६. एकठ गीत ५३
२७ काजळी तीज ५६
२८. बीड़ो उठाओ ५८
२९. छालर ६०
३०. हालरो ६२
३१. हरदौल ६३
३२. दुद्धो ६९
३३. मीना बजार ७२
३४. भील-भीलणी ७७
३५. बणज्यारो ७८

अणबाँच्या आँखर

उडना पंखेरू मांड' लांबर गगन पड
गूंगोपण प' कोई बांच' न बोल' रे ।।
भालो देवे रे भीगा' घूंघट कळियां
आंधो मनक, कोई हांमे न हाल' रे ।। गूंगो....

पीडा हेलो देव' कोई बात न बूझ' रे
प्रीत की बवावरी पळक नहि पूँछ' रे,
दमना जे दीख' व' पराया सबका ही रे,
देळ विसवास' धणी द्वार न खोल' रे ।। गूंगो....

अणमीच्यो वन में केसूलो मुळकाव' रे,
हाथां सहळाता भी लज्याळू कुमळाव' रे,
कांई की उमंग ऊं क' ई क' दुख कांई को,
कोई न' नवज यहां कोई की टटोळ' रे ।। गूंगो....

पतझड कद आयो अर कद चलग्यो,
आमो कद मोर आयो अर कद फळग्यो,
अब क' वसन्त में कदेक बोली कोयळ,
कुण विरहण हाय ! बैठी न हिंडोळ' रे ।। गूंगो....

बायरा गाव' छ र क' नशास ढाळ' छ
सूरज बाळ' छ र क' जगत उजाळ' छ
नाच' छ ये झरणां क भटक' छ' दर दर,
न्हाव' तो छ' यां में कोई मन झकोळ' रे ।। गूंगो....

अपणो ही सुर में अपणो गीत गावणो,
अपणो ही रामकथा मनक सुणावणो,
बोझ तो ऊमर को ढोव' छ' सारी दुनियाँ,
हेत को कळश वोह्यो मर मर ढोळ' रे ।। गूंगी ...

उड़ता पखेरू मांड' आंतर गगन पर
गूंगी धरा प' कोई बांच' न बोल' रे
झालो दे झीण' झीण' घूंघट कढ्यो,
आंधो मलक कोई हांस' न हाल' र ।। गूंगी....

गीत

मुखड़ा' मेंदी रचगी, हिगळू की हाँम' रेग्य,
धीवट कर मणगार टेल प' मूनो मायो टेक,
जागो मिरगा नैणी — बोलो कोयल - वैणी
कांई भी मूता सज्या ढाळता ?

बीरा ऊवा वारण' कर पूछ' ये मनव्हार
"क्यू दमनी म्हारी जामण जाई चंचळ वहण अवार
घर की मूनचडी ए—कोमल फूलछडी ए—
कुम्हळा मत रूपक घर की डाळ का—
कांई भी मूता सज्या ढाळता ?"

भाइल्यां हेलो दे बोली—"घूमर घाला चाल,
मत रूस' म्हारी मीठी मंणा' परणां देंगा काल,
लाड़ो लंगड़ो आव,' हासो क्यूं नें' आवड
क्यूं नैणां भर भर मोती राळता—
कांई भी मूता सज्या' ढाळता ?"

मायो चूम कलेज' चंटा मायड बोली—"जाग,
घुल मत ये म्हारी फूलांराणी ! थोडी चाळ' लाग,
वणज मनख्यां का होर्‌यो—तोल म्हाई जे होतो,
कळिया को झूमको का पाळता—
कांई भी मूता संज्या ढाळता ?"

विक्रय के लिये नहीं

'मन गाढो कर बेटी !"-बाबुल बोल्या भर भर आंख,
"ब'ठी बांध गरीबी धारा सागरिया का पांख,
म्हूं ही गहणें मल जाऊं—कोई मे तो बक जाऊं—
धन होतो तो क्यूं गोदी गाळता—
कोई मी सूता संध्या ढाळता ?"

बुझती बार मचोळो गाय' ज्यूं दीपक की बात,
अधजागी अधसूती गोरल गोल्या दोन्यूं हाथ—
मेंहदी मंगळ डोरो—हिंगळू काजळ कोरो,
टीको सुहाग की उजाळता—
कोई भीं सूता संध्या ढाळता ?

"दुखड़ा फेरा लाग्या र' बाबुल ! आंसू भरग्या हींगळू,
अब तोरण की चिन्ता छोड़ो परणी अम्बर बीद सूं,
कजा की डोळी आगी—बीदणी आफू लागी,
डाइजा ऊमर भर जो बाळता—
ई लेख' सूता संध्या ढाळता।"

"बेकळ मन, ऊजळ तन छोड्यो बाबुल ! थांको बाग,
घुट घुट बेसळग्यां ही बझगी या ऊमर की आग,
आसा हारी थाकी — कुल मरजादा राखी,
तोरण प' थां की पाग उछाळता।
ई डर सूं सूता संध्या ढाळता।।"

धरती सूं

पसीना का बीजां सूं झोळी ए भर दी।
तू तो एक का सँहस कर द' री धरती ।।

दट्टा 'र दडूकल्या मेट्या ए म्हां न' खाळ,
दहँग्यां को जमारो आयो कट्या जद जाळ,
ब'ळा की हिम्मत बिन को नं' सरती ।। तू तो.....

ऊँची ऊँची डूँगर्यां सूरज मळक'
र साम' हळ, धोळ्यां की सोगोट्यां पळक'
ए ऊमरां न ऊमर हरी ए करदी ।। तू तो.....

बाग' जद बायरा 'र सर सर हाल'
रे डेगड़' गोफण हाळी गोरज्या रुखाळ'
रे चारस्यां की लाँरां कलकारा करती ।। तू तो.....

बादळा 'र बीजळा धड़ूका देती धार,
मोर्यां को कोकाट रे पपैया की पुकार,
बीच बीच गीतां की झरण झरती ।। तू तो....

म्हांकी महनत माता धरती को दान,
मोतीड़ा सूं भर जावे पेळा पेळा पान,
मरदाँ न काबू तकदीरां करली ।।
तू तो एक का सहँस कर द' री धरती ।।

गीत

रात कर' रखवाळी—काट' परभात रऽ
चंदा क' खेत खड़ी तारां की शाख रऽ ।।

बादळ में' रंग ढुळ' जळ छाव' रूप रऽ
सूरज को जीव वळ' धरती ले धूप रऽ
कुण सेजां मांड रही—कुण, को सुहाग रऽ ।
चंदा क' खेत खड़ी तारां की शाख रऽ ।

हीरां की खान खुद' रह जाव' धूळ रऽ
धरती का प्राण पी 'र हांस' छ फूल रऽ
जगभर नें' जोत मल' दीपक नें राख रऽ ।
चंदा क' खेत खड़ी तारां की शाख रऽ ।

मन कुण प' वार दियो तन कुण क' हाथ रऽ
कोई को हर पल नछरोवळ कोई की बस रात रऽ
हथळेव' चेक दियो मेंहदी को दाग रऽ ।
रात कर' रखवाळी—काट परभात रऽ
चंदा क' खेत खड़ी तारां की शाख रऽ ।

कबूतराँ को जोड़ो

डागळी क' छाज' कबूतरां को जोडो,
म्हूं निरखण लागी कबूतरां को जोडो ।।

अतनी सी बात माँ न' बाबुल मूं जा' कही,
बाबुल न' हाथ पेळा' करवा की साधी,
घुटल' पलाण वीरा उगणी दिशा ली,
म्हार' मर घूमट्यो मळक गई भाभी ।
गूटरगूं बोल्यो कबूतरां को जोडो । र' डागळी क' छाजऽ ...

घणां राजी वीरा बावड़ घर आया,
सातूं सहेल्यां मिल मंगल गाया,
भाभी व'ठाण म्हार' सीगसा कराया,
डोढ्यां शहणाई नगारा गरणाया ।
गूटरगूं बोल्यो कबूतरां को जोडो । र' डागळी क' छाजऽ....

वीरा लाया सोनां रूपां का ये गहणां,
वेसड़ला सीव' काक्यां व'ठी ए अगणां,
छूट्या हे राम लाडी फूल्यां का रमणां,
कांचली का बूंत लिया भाभी न' कसणां ।
गूटरगूं बोल्यो कबूतरां को जोडो । र' डागळी क' छाजऽ....

सावली उतार म्हूं ई पडळो पहरायो,
हाथां म गजदन्ती चुडलो खँचायो,

पाना पाका बांगां को मंडो जे गोयां,
ग्यागरणां न मांग म्हारे हिगमू भरायो।
गूटरगूं बोल्यो कबूतरां को जोड़ो। र' डागळी क' छाज

पाना पाका बांगां को मंडो जे गोयां,
गावुस को द्वार पेळा तोरण गूं ओयो,
हियड़ा न थाम म्हारो हथळेवो गोयो,
पंखां को यो पुत्र म्हारो परमेश्वर होयो।
गूटरगूं बोल्यो कबूतरां को जोड़ो!
र डागळी क' छाज' कबूतरां को जोड़ो!
म्हूं निरगण मागी कबूतरां को जोड़ो!
गजब कोई होयो कबूतरां को जोड़ो!!

गीत

मारा आंसू पीग्यो ऊमर को रेतीलो तीर रे,
तो भी नही धुपी यादां की या धूंधळी लकीर रे ।।

उघडी मिली म्हेंन' पगथळियां गेला प' चोराया पऽ
हाल घडी उठ चल्या अस्या सैंनाण मिल्या हर छाया पऽ
आसा का मृगजळ क' पाछ' भटके मन की पीर रे ।। या ...

कदी नही आया म्हारे आंगण तो तुलसी पूजवा,
सपनां क' द्वार' भी आतां व' पग लाग' धूजवा,
नं' मदिर में' मिल' न मूंडा सू बोल' तसवीर रे ।। या....

कद की बोई वेल चमेली हाल न आया फूल रे,
कद का म्हारी पून्यूं ऊपर रह्या बादळा भूल रे,
कद सूं सिमट्यो साम्यो मन को पडियो पचरग चीर रे ।। या....

तात' तव' बूंद ज्यूं टमक' ये गीतां रा बोल रे,
दो जुग वड़ी कहाणी बणगी कहूं न तो भी खोल रे,
कसक' तो भी काढ न पाऊं यो दो धार्‌यो तीर रे ।।
सारा आसू पीग्यो ऊमर को रेतीलो तीर रे,
तो भी नही धुपी यादा की या धूंधली लकीर रे ।।

तू अर म्हूँ

थारी नींदी आंख म्हारी छाती को उठाण,
रूप को डळो तू म्हार' जूम बेपरमाण ।।

म्हारा हाथां धरती प' मोती चमकऽ
थार' री कळेज' प्रीत गंगा अमगऽ
तू छ' गोरा पारवती, शम्भू करशाण ।। रूप को ...

लू ये शेळी रातां, झड़ झेल्या म्हेंन' माथ,
आंसूड़ा पी करी थें नें' दूधां बरसात,
थार म्हार' हाथ करबा की बड़ी आण ।। रूप को ...

छोटी सी छपारी म्हार' धरती की सेज,
थार' गोरी घूंघटा में' सतियां को तेज,
मनखपणां की काया म्हूँ ए री तू प्राण ।। रूप को ...

धाट्यां, वन, टाट्यां में लगाद्यो म्हें नं' बाग,
सांस थारी गंध लाई, रंग लायो राग,
दोनूं हाथां दान करां, सुख का खलाण ।। रूप को ...

थारी नींदी आंख म्हारी छाती को उठाण,
रूप को डळो तू म्हार' जूम बेपरमाण ।।

गीत

वैरी मत खा र' काळचड़ा खेतां की ज्यार,
बाबुल को खेत म्हारा मन को शणगार। वैरी .

झोळ्यां पसार म्हेंनं' मेघो बुलायो,
थाक्योड़ा बळदां सूं मर मर हंकायो,
पूजा ले धरती न' हरियो उगायो,
अब छाती प' खेता का कड़ता को भार। वैरी ...

दमनी पडजाव'गी होळी दिवाळी,
घूमर मं' गा गा न बाज'गी ताळी,
गं'ण' मलज्यागी गोरी की खुगाळी,
अर फीका पडजाव'गा तीजां का थ्वार। वैरी ...

रखड़ी की रह ज्यागी फेरूं जडाई,
रक ज्यागी चुडला की चूंपा चढाई,
फर ज्यागो फेर म्हारा लगनां को नाई,
वही बाबुल तजदे म्हारा ब्याव को वच्चार। वैरी

सूनी सूनी लाग'ये सेळी रातां,
सुणवाई तरस' मन कोई की बातां,
भालो नी दे पास्यूं मेंहदी रे हाथां,
म्हारी अणवांधी रह जासी बंदणवार। वैरी...

भाइल्यां परणगी, जा पहरया रमझोल,
भाभ्यां 'र अ'स फेरूं मार'गी बोल,
मत छेड़' देस म्हारा गोफण को टोळ,
म्हार' काना में गूंज रही जान की झणकार। वैरी ...

महलां जा मोत्यां का चुग्गा मल'गा,
लछमी का झाड़ चुगे ज्यूं ज्यूं, फळ'गा,
झोपड़ियां क' आंगण' आंसू ढळ'गा,
अरे मत खावे काजळ अर हीगलू प'खार ॥
वैरी मत खा रे काळचड़ा खेतां की ज्यार।

आंसू अर गुलाब

आंसू मत ढाळ री गुलाब की कळी !
आखी ऊमर थैं न' जी की हँसी राखी ए,
जी नैं थैंई हिवड़ा रे ऐड़'-छेड़' राखी ए,
अमी सोरम फैला-ऊं' को जस उजळे
महक उठे रे आखा गाँव की गळी ।। आंसू मत····

थारो रुखाळो थैं न' गयो नही छोड़ रे
नेहरू न' तन धार्‌या पैंताळीस क्रोड रे
एक दिवला न' असी जोत उजाळी ए
हर हिवडा म' वा ही मूरती ढळी ।। आंसू मत····

ऊँचा गगन सूँ तिरंगो बतळाव' रे
धजा लहराव' ऊँ मैं' नेहरू मुळकाव रे
तन को कफन तो कफन छो ए बावळी
चन्दण—चिता प' चढी हेम की ढळी ।। आंसू मत····

चमनी सूँ धूधाड़ो उठे रे धन-धंधा को,
मंदिर मस्जिद पड्यो नाम नदी-बंधा को,
नहरां मं' लहरातो आवे ऊँ को सपनो
सूनो निपजावेगी रे रेत की थळी ।। आंसू मत····

खेता करगाण का पसीना मं' ऊ मांक' रे,
मोट्यारां मं' नेहरू का आसा-फळ पाक रे,

कलकारी मार खेले टाबर टोळी ए
काका नेहरू को ले 'र असीस या पळी ।। आँसू मत

उठ' वरवूळ्या तो फिकर मत करजे,
लुआँ बळबळती बाजे तो मत डरजे,
अमर वसन्त नेहरू करसी रुखाळी ए
पतझड़ होवे चाव्हे छळी' रे वळी ।। आँसू मत ...

सीमा को सिपाही बण हरदम जागे रे
नेहरू का ललाट-सो हिंवाळो अब लागे रे
कच्छ कश्मीर सूँ कुमारी-अन्तरीप ताँई,
नेहरू की भसम कण कण में' घुळी ।।
आँसू मत ढाळ री गुलाब की कळी ।।

ग़ज़ल

(१)

थां न' आया तो था पून्यूं की रात सूनी छइ
जस्यां तो चांद क' बिना बरात सूनी छइ ।

सोऊं तो सेज चुभे जागूं तो नेणां भारी,
था बिना बात करूं तो बा बात सूनी छइ ।

यूं तो व' फूल हंस्या, बायरा न बळ खायो,
मारूं भंवरा बिना फुलवास-पांत सूनी छइ ।

ऊंच' चढ मोर करे मेहो मेहो मेघा मूं,
तसायी प्रीत फिरे तो बरसात सूनी छइ ।

म्हारी मेडी म' उगे चांद जदी म्हूं जाणूं,
लाख तारां भरी नभ की परात सूनी छइ । थां न' आया...

(२)

जाणतां बीणतां विस्वास करयो भूल करी
व' तो व' ही छा म्हूं ही भूल गयो भूल करी ।

व' तो हंस्या छा म्हारा हाल प' बेपिकरी मूं
म्हांन' झूठ्याई भरम पाळ लियो, भूल करी ।

मुजरो

आई रणथंभा मुजरो करणां मायड़ लाजे रे-
मायड़ लाजे-रणथंभा एकड़का बाजे रे।

कीकर बनियां बीगती-कीकर गूंथू हार,
अधक' फूल उठावतां ज्यूं जळता अंगार ॥
हटीला मायड़ लाजे रे।

काजळ रातो पड़ गयो-नैणा न देवे नैण,
कीकर गाऊं कलायणी मुख वळवळता बैण। केसरिया मायड़....

पायल ल्यू ब' परसळी-मन म' माची होड़,
मायड़ री पलका झरी-पायल दीनी तोड़। बादीला मायड़

कीकर नाचूं आंगणे-टोढ्यां लागी आग,
रण वणग्यो सबको धरम-की चूंदड़ की पांग! पातळिया मायड़.

कुण की कोख अभागणी, फीको स्वाग सिंदूर-
कुण की राखी अणमणी, बावल घोळा धूळ! आलीजा मायड़ ...

अबर कापे तोप सू-धरती वीर प्रयाण
घायल म्हारा सूरमा-झेले रति का बाण। छबीला मायड़ ...

बखतर पहरयां म्हू खड़ी मुजरो करती बार,
चूड़ी सांटे सौपद्यो तिरियां ई तलवार ॥ अलबेला मायड़....

कामण कर करपाण ले-कमधजिया ले फूल,
लाछण लागे दूध प'-लाज्यां मर' छ' धूळ ॥धणी म्हारा मायड़ ..

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

मुजरो

आई रणवेळा मुजरो करतां मायड़ लाजे रे-
मायड़ लाजे-रणवंका एकडका बाजे रे।

कोकर कलियां बीणतो-कोंकर गूंथूं हार,
धक' फूल उठावतां ज्यूं जळता अंगार ॥
हठीला मायड लाजे रे।

काजळ रातो पड़ गयो-नैणा न देवे सैण,
कोकर गाऊं कलायणी मुख बळबळता बैण। केसरिया मायड़....

पायल ल्यूं क' परतळी-मन में' माचो होड,
मायड री पलका भरी-पायल दीनी तोड। वादीला मायड

कोकर नाचूं आंगणे-डोढ्यां लागी आग,
रण बणग्यो सबको धरम-की चूंदड़ की पा'ग! पातळिया मायड..

कुण की कोख अभागणी, फीको स्वाग सिंदूर-
कुण की राखी अणमणी, बावल घोळा धूळ! आलीजा मायड़ ...

अवर कांपे तोप सूं-धरती वीर प्रयाण
घायल म्हारा सूरमा-झेले रति का बाण। छबीला मायड....

बखतर पहर्यां म्हूं खड़ी मुजरो करतां वार,
चूड़ी सांटे सौंपद्यो तिरियां ईं तलवार ॥ अलबेला मायड़....

कामण कर करपाण ले-कमधजिया ले फूल,
लाछण लागे दूध प'-लाज्या मर' छ' धूळ ॥घणी म्हारा मायड़ ...

फेर कफण माथा पर बांधो
म्यान तोड़ तलवारां थामो
मां को दूध चुकावा की या वेळा फेर न' आणी रे ।। तलवारां को ...

तन मं' जद तांई सांस रह'गो
एक बूंद भी रक्त रह'गो
जद तांई कणकण मुक्त न व्हेगो
कोई भी आराम न लेगो
भारत को हर नर क्षत्री अब हर नारी क्षत्राणी रे।। तलवारां को....

मन मं' कोई हूंस न रहणी
ज्यो कहणी रणखेतां कहणी
मट जाणो दासतां न सहणी
कट जाणो पण धरा न देणी
कायर सौ सौ बार मर' छ' एक बार बळिदानी रे ।। तलवारां को ...

कांकड़ ऊपर वैरी बोले वारूदां री वाणी रे
सुळग' अगनी गेळ' दूंगर जाण' तिड़क' धाणी रे
कमर बांधो परसण चालां तलवारां को पाणी रे ।।

इं वेरागी को तप टूट्यो
मां की रसड़ी को नग फूट्यो
घूंघट में' सूं तारो टूट्यो
फेरूं जोहर को सत उठ्यो
र' वांई फेरूं देणी मूंडां की सेनाणी रे ।। तलवारां को

राणा जी सो हिवड़ो करल्यो
पीथळ सो कंठां सुर भरल्यो
दुढा सरखा वेटा देद्यो
भामाशाह ज्यूं सरवस देद्यो
की सेजां सोणो पातळ रोटी खाणी रे ।। तलवारां को

खून दियां सूं घाव भर'गो
दान दियां सूं ज्हाज तर'गो
सूनो द्यो फौलाद ढळ'गो
हुंकारो संमदर उवळ'गो
सीनो बण चोजावां-अतनी नवज बढाणी रे ।। तलवारां को

फेर केशर को टीको काढो
राखी तागो करल्यो गाढो

हेलो

जागो ऐ सांवळी धरती का बेटा ओ।
शेळो डूंगर मांग' ताजा खून ई,
ठंडो बर्फ बुलाव' ताता खून ई ।। जागो ऐ ...

जी दिन जायो धरती मा न' भारत रो सपूत
हिवाळा को आंचळ पायो गंगा-जमनी दूध;
झांको रे—
धोळो दूध बुलाव' राता खून ई ।। शेलो ...

बलिदानां को पौधो रोप्यो, धरा करी आजाद,
लाखूं बीरां नं' निपजाया दे प्राणां को खाद,
चालो रे—
बलिवेदी न्योतो दे गाता खून ई ।। शेलो

आजादी की मूरत तोड़' कुण पापी का हाथ
परकोटा का कंगूरां प' लापर मार' लात,
हुंकारो रे—
पाणी ललकारे जाडा खून ई ।। शेलो ...

संमदर उफण्यो, पाछी फिरगी सब नंद्या की धार,
मंझ काती म' झक्कर चाली सुण मां की पुकार,
उट्ठो रे—
उघो शैल तके बळखाता खून ई ।। शेलो...

राखो मांग' नेग, दूध मांग' मरणो त्यौहार,
चुड़लो हिगळू वड वड माग' जौहर को अंगार,
दौडो रे—
आजादी हेलो दे सांचा खून ई ।। शेलो ...

मुर बदलो गीता का भैया बलिदानी रुत आई,
मेज मिराणा कोयलडी नं' मारू रागाँ गाई,
वीरा ओ रे—
कपफण रगवाद्यो पाका खून ई ।। शेलो....

कण कण माथां सूँ मँहगो छ,' धरती साँटा प्राण,
ऊजड भारत भी राख'गो ई झण्डा को मान,
मागे रे—
मा को खप्पर बैरियां का खून ई ।।

जागो ऐ सांवळी धरती का बेटा ओ,
शेलो डूंगर माग' ताजा खून ई—
ठंडो बर्फ बुलाव' ताता खून ई ।। जागो ए ...

हेलो

जागो ऐ मांगळी धरती का बेटा ओ।
शेलो डूंगर मांग' ताजा खून ई,
टंडो थकै बुलाव' ताजा खून ई ।। जागो ऐ —

भी दिन जागो धरती मा न' भारत रो सपूत
हियाळा को आंगळ पायो गंगा-जमनी दूध;
भांको रे—
घोळो दूध बुलाव' ताजा खून ई ।। शेलो —

बलिदानां को पीधो रोप्यो, धरा करी आजाद,
लाखूं बीरां न' निपजाया दे प्राणां को खाद,
चालो रे—
बलिवेदी न्योतो दे ताजा खून ई ।। शेलो

आजादी की मूरत तोड़' कुण पापी का हाथ
परकोटा का कंगूरां प' लापर मार' लात,
हुंकारो रे—
पाणी ललकारे जाडा खून ई ।। शेलो ...

संमदर उफण्यो, पाछी फिरगी सब नंद्या की धार,
मंझ काती म' झक्कर चाली सुण मा की पुकार,
उट्ठो रे—
सूधो शैल तके बळखाता खून ई ।। शेलो...

रासो मांग' नेग, दूध मांग' मरणो त्यौहार,
चुडलो हिगळू वड वड मांग' जौहर को अंगार,
दौड़ो रे—
आजादी हेलो दे सांचा खून ई ।। शेलो...

सुर बदलो गीता का भैया बलिदानी रत आई,
मेज मिराणा कोयलडी नं' मारू रागां गाई,
वीरा ओ रे—
बपफाण रगवाद्यो पाका खून ई ।। शेलो....

कण कण माथां सूं मँहगो छ,' धरती सांटा प्राण,
ऊजड भारत भी राख'गो ई झण्डा को मान,
मागे रे—
मा को खप्पर वैरियां का खून ई ।।

जागो ऐ सावळो धरती का बेटा ओ,
शेलो डूंगर माग' ताजा खून ई—
ठडो बर्फ बुलाव' ताता खून ई ।। जागो ए....

हेलो

[illegible] है [illegible] धरती का [illegible] ओ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है,
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है ।। [illegible] है —

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] रे—
[illegible] [illegible] [illegible] है ।। [illegible] —

बलिदानों की [illegible] [illegible], [illegible] करी आजाद,
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible],
[illegible] रे—
बलिवेदी [illegible] [illegible] [illegible] है ।। [illegible]

आजादी की मूरत तोड़ कुण पापी का हाथ
परकोटा का कंगूरां प' सापर मार' लात,
हुंकारो रे—
पाणी ललकारे जाडा खून है ।। शेलो ...

संमदर उफण्यो, पाछी फिरगी सब नंद्या की धार,
मंझ काती म' झक्कर चाली सुण मा की पुकार,
उट्ठो रे—
सूधो शैल तके वळखाता खून है ।। शेलो...

राखो मांग' नेग, दूध मांग' मरणो त्यौहार,
चूडलो हिगळू वढ वढ माग' जौहर को अगार,
दौड़ो रे—
आजादी हेलो दे सांचा खून ई ।। शेलो....

मुर बदलो गीता का भैया बलिदानी रत आई,
मेज मिराणा कोयलड़ी न' माल रागां गाई,
धीरा ओ रे—
कपफण रगवाद्यो पाका खून ई ।। शेलो....

कण कण माथां सूं मँहगो छ,' धरनी सांटा प्राण,
ऊजड़ भारत भी राख'गो ई झण्डा को मान,
मांगे रे—
मा को खप्पर वैरियां का खून ई ।।

जागो ऐ सांवळी धरती का बेटा आ,
शेलो डूंगर माग' ताजा खून ई—
ठडो बर्फ बुलाव' ताता खून ई ।। जागो ए....

गीत

वालमा की भायली बन्दूक, म्हारी स्योक
वांक' सारां सारां डोले म्हांसूं ईगसा करऽ
स्योक बन्दूक म्हां सूं ईगसा करऽ।

म्हूं तो नूतूं सेज पिया नं', वां नूत' रणखेतां,
अलवेळा को मायो ठणक' गोरी गोड' रहतां
वांक' कांध' बैठी स्योक रणरंगरेळियां करऽ।
म्हां सूं ईगस

म्हूं पग मांड्यां पाट' बैठी सज सोळा सिणगार,
निरखण लाग्या छैलभंवर म्हारा काजळ की मनम्हार
रण को धूंसो सुण होग्या म्हारी स्योक साथ रऽ।
म्हां सूं ईगस

म्हारी गोदी धीयो खेल' पी आंचळ को दूध,
स्योक पालण' जमदूतां सा गोळी—अर बारूद
रण का लोभी लाल की अब लाग न करऽ।
म्हां सूं ईगस

परणी को पिया स्वाग सधाव' टोटो हिंगळू को ही,
पण राच' संगीन स्योक की पी पी ताजा लोही
मद छकिया का नैणां सूं अब आग सी झरऽ।
म्हां सूं ईगस

[illegible] हूँ तू प्यारी तो मूँ [illegible] तारा,
[illegible] हमारी हूँ तूं [illegible] कामणगाळा म्हारा,
दो की उम उजळाजे जी पं दाग न पड़ऽ।
म्हाँ मूँ ईगसा....

[illegible] मन मन हेत सजन को जुग जुग का परणेता,
[illegible] निभाजे, [illegible] मन करजे रंग को आंगण लेतां,
दो की जटी [illegible] दोट' थारी गोठिया तरऽ।
म्हाँ मूँ ईगसा....

म्हारा कंत [illegible] थारा भी, बेटा धरती मां का,
म्हारा [illegible] जनम नछरावळ प्रण रहज्या पण बांका,
ऊही ध्याग अमर जे धरती कारण' मरऽ।
म्हाँ मूँ ईगसा....

राखी

राखी रखाण म्हारा वीर !
पीड़ा का सावण मूम्या रे ऽऽऽ
नैणा छलक' रे सारो नीर, म्हारा वीर !
राखी रखाण म्हारा वीर !

धरा बांधे राखी गून पगीना का मोती दे
गगन मांग' छ' रे जुझारां जगी ज्योती दे
इतिहास मांग' छ' करंज केई पीड़्यां को
राखी-तागो गंगा अर जमना को तीर ।। राखी...

राखी जे बंधाय' तो माया को मोह छोड़ दे,
भुजबंध छोड़ दे, कंगण डोरा तोड़ दे,
राखी ललकार छ' रसम कोरी कोई नंऽ
माता में' मिल'गा फेरूं राभा अर हीर ।। राखी...

आजादी आकुळ हो बांधण आई राखी रे
कळाई बढादी ज्यांन' को रंग उजळादी रे,
आपणे लेखे तो या तिरगी धजा राखी छऽ
अरपण प्राणां को यो पचरंग-चीर ।। राखी...

आवरू छ' राखी की खेतां में' खलिहाणां मंऽ
मंदिर, मस्जिद—जस्या कळ कारखानां मंऽ
आंगण तो एकता को संतरी रुखाळ'गा
र' देखो र' पहली मारे जेई मीर ।। राखी....

काळ जे पडे तो मरदानगी ही लाज' रे,
शूरापण मोव' अर बेईमानी गाज'रे,
रगत रगत नही पाणी छ ऊँ रग मँऽ
जी' क होता टूट जाव,' सोमा की लकीर ।। राखी

राखी मं' केई का आँसू—केई को सिन्दूर छऽ
धरती की धूळ माँ को दूध भरपूर छऽ
राखी म' मौगध छ' शहीदाँ का रगत को—
राखी छ' रामेश्वरम्, राखी कशमीर ।।
राखी रखाण म्हारा बीर ।।

विजैदसमी

मूँड' बोलो राम थां क' कांई मन में' रऽ
नकली रावण मर' साल का असली जनम' रऽ।
पंचवटी की लछमण रेखा सालूँ साल उलांघऽ
सीताहरण मरण वीरां को, कायर माफी मांगऽ।
आड' फरतां मर' जटायू सूनां वन में' रऽ।
लंका जीत' राम अयोध्या भरत लाल जी लूटऽ,
चोमेरूँ मंथरा राज, कोसल्या छाती कूटऽ
सत राणी को, मत राजा की, खाक हवन में रऽ।
सीता न्हाळ बाट मूँदडी बजरंज चट कर जावऽ
भगत कर' हड़ताळ राम जी दे दे ढोक मनावऽ
संजीवण कुण लाव' लछमण तड़प' रण में' रऽ।
चोड़' पाड़' कर' विभीषण लंका सूं गद्दारी
अठी राम सूँ रिश्वत खाज्या कंठी-माळा-धारी
उलट्यो थांको राज रामजी नींव गगन में' रऽ।
जुग बीत्यां पण मर्‌यो न रावण बेल बंस की दूणी,
ऊपर सूं मंदोदर राणी दे मिरच्यां की धूंणी,
कुम्भकरण जाग्यो, सोग्यो भगवान भजन में' रऽ।
रावण की लंका सोनां की दन दन चढ' कंगूरा,
कुण तोड़' ? कांई भगत बढ़' तो खींच' टांग लंगूरा
कांकड़ हेलो दे पण अंगद पड्या भवन में' रऽ।
मूंड' बोलो राम.....

चालो चम्बल कराड़ धण बावँगा

चालो चम्बल कराड़ धण बावँगा।
[illegible] मनावँगा-ऐ मन गावँगा ॥

[illegible] मदर, [illegible] चूर चूर,
[illegible] हाँसी हुंकार-रण राग पूर,
[illegible] आज [illegible] काम काज,
[illegible] राज राम को लावँगा ॥ चालो....

[illegible] हूं [illegible] फोड़,
[illegible] दीन [illegible] जोड़ जोड़,
आपण [illegible]-माता को दूध
[illegible] बलिदान चुकावँगा ॥ चालो.....

दोनूं हाथा उछाळ कदी लेवां कुदाळ,
धरती को दलिद्दर देगां उखाळ,
दन रात झूम-राजी कर' र झूम,
यूं मनख जमारो उजलावँगा ॥ चालो....

जद खोदूं म्हूं गार, तू भरजे लार,
[illegible] नहर बछादया आरपार,
कर धरा न' हरी, धन धान भरी,
अब नयो संसार बसावँगा ॥ चालो.....

हंस जाव' गी तक्ख्यां, मिल जाव' गी तक्ख्यां,
जद मोती भर भर लाव'गी पक्ख्यां,
पगो हुस्न मान—कर नाच गान-
सब मंगल मोद मनाव'गी ॥ चाला—

कर बांध जस्त—हिम्मत बे-अस्त,
जे हार' न' न' मांना शस्त,
घर घर उजाग—हो' विकास
सपना सदस्य अपनावें गी ॥
चाला चक्रम कराह' पग बावेंगा ।
ठेंगी सहरा गूं ताल मनावेंगा-ऐ मल गावें गी ॥

जमावड़ा

[illegible]

[illegible]

[illegible] ।।जमावड़ा

गढ़ा पर [illegible] न' आव' टरो उट [illegible] न' ग्वाळा की,
[illegible] भेळ' [illegible] ऊ पाड़' [illegible] ग्वाळा की,
[illegible] मन [illegible] बीणया पाड़ [illegible] घूघर [illegible] नऽ
ऊ दन भी [illegible] ग्वाळा आ आव' [illegible] मलावा नऽ
[illegible] लुवाये [illegible], भूखा मरतां चक्कर आवऽ
[illegible] लुवातणु देय उगाणां कुण आव' र' बरसावऽ
भवकर [illegible] डाल' मूला टाबर न भळसाव' रऽ
[illegible] भी तो असी वळती म अळसाव' रऽ
म्हार' लेख' माता का कोई न' सास पल छिन का ।।जमावड़ा....

दाण' दाण' मोहर लगादी शोषक साहूकार नंऽ
बैलां ज्यूं छीक्यां दे रास्या घर भर का करतार नंऽ
यो मळकातो आंगण म्हारा हाथां की कमाई को,
टाबरड़ा की भूखी आंतां धन धनजाई को,
डाल' डाल' उड़ज्यागो र' खाग्ल ज्यूं हरख तो
जीवड़ा को रोतो रोतो चाल'गो चरख तो,
यो तो रुपाळो लछमी को रूपक र' बणावटी,
म्हूं तो अन्नदाता छूं खलाणां में' दखावटी,
रीती डाल, शलाटा र' गयाही यां दो दन का ।।जमावड़ा...

ऐगड़ फोड़या करड़ी छाती हाळा म्हारा धोळ्या नंऽ
कूंता को खाखल खायो भूखां काटी बागोलां मंऽ
छालर गाई ब्यावण आई लेरां ही उठाणं' रऽ
गोबर म्हां कुराळां आल्यां लागी दाणं' दाणं' रऽ
एक बरस पहली म्हां खावां आग' की कमाई रऽ
काया म्हां की, प'लाई कमाई सम्हलाई रऽ
डांडा कोल्हू चौमासो बतादे बणा भारी रऽ
फाटा छ गवूल्या श्याळ' श्याल' धूणी बाली रऽ
पण जिंदा ये रखाण' म्हान' आसा फळ अन्न का ।।

जमावड़ा दो दन का ।।

वीरा

वीरा ओ—जामण जाया वीरा ओ—
वेगो बताजे घर का रूंखड़ा—
ओळूं आव'गो नित—
ओझाक' आव'गा ये झूंपड़ा ।।

चाली र' घर सूं गाडी–दूर' देशां की आडी—
कसक' र' काळज्यो, वेगा चतारज्यो,
रोव'गी मायड़ली–न्हाळ'गी बाटडली—
बाबुल तो पूर'गा र' बसूकड़ा ।। वेगो····

पहलांदा ढोरड़ी जे–पाळी म्हूं गोरड़ी ए
ब्यावण को वळो, लूण्यो मसरी डळो,
म्हूं नं' चखाइजे, वेगो बुलाइजे,
कोड्या सूं शणगारूं ऊंका केरड़ा ।। वेगो····

फूलां सी सुगणी भाभी' मोत्यां रूपां की डावी
झोळ्यां नन्दलाल ले आंगण उजाळ दे
लाऊं' पतासा थाळी, कडूल्या र खुगाळी,
नाई सूं खनाजे हरिया दूबड़ा ।। वेगो····

बालपण' आमो रोप्यो, वद वद रूंखड़लो होग्यो,
बोल' जद कोयल्यां, हीद' जद भायल्यां,

अब क ब'शाख मैं, गदराई चाख मंड
नुवा र' करवाजे ईं का आमड़ा ।। वेगो ··

कडक' जद वीजळ्यां र' आंसू भर' वादळ्यां र
पाँडू को मांडणो ओप' र आँगणो
भीज' न ऊँक प'ली, सूखी होव'र' गेली,
उठवा ही लांग' र जद दूंगड़ा-।। वेगो···

लड़तो रही र' भडतो, जातां पगां प' पड़ती,
वहण कह्व' ए, नेण वह्व' ए,
पीयर वेट्यांन का, लाडी फूल्यांन का,
घरखूणयां हाळा ए जाण' भूँपड़ा ।। वेगा····

हाळी ए हाळी वीरा, गाड़ी चला र' धीरां,
पूजी छ देळ घर की, नरखूं पर गेल फरती,
कागा उड़ाऊँगी, हिचक्यां मैं आऊँगी,
कुण जाण' फेर कद आवां यां गेलड़ां ।।
वेगो वताजे घर का रूँखड़ा ।।

वीर की विदा

धरती का लाल जा ए— म्हारो कोल पाळजे
आज विदा की वेळा—आंसू मत ढाळजे ।।

भूल जाजे गोद म्हारी धरा मत भूल जे
हिया का कंवळ ! अब बलिपथ फूल जे
जा रे म्हारा दूध ! जा ए
मत का सपूत ! जा ए
कोख उजाळजे । म्हारो कोल पाळजे ।

राखी की डोर थारे बांधी म्हारा हेत नऽ
आज बुलायो वीरा थं ई रणखेत नऽ
जा रे म्हारा जामण जाया
आंसुवां का नूता आया
राखी सम्हाळजे । म्हारो कोल पाळजे ।

हथळेवो हाथ लियो पांचां क' बीच मऽ
माथा का मोड, न' भुजजे वैरियां क' बीच मऽ
सेज की उमग जा ए
हिगलू का रंग जा ए
रणखेत रचाळजे । म्हारो कोल पाळजे ।

बाबुल लिखाई म्हारी था न', धरती मोह मऽ
म्हारी भी हेलू' था जे लेवो धरती की गोद मऽ

एक म्हूँ मना'र राखी
लाखा की पुकार आगी
ईं न' मत टाळजे। म्हारो कोल पाळजे।

म्हारो रूप दीखे थें मैं' म्हेंन' तलवार दी
म्हारी मरदानगी नं' पाग ले उतार दी,
नैणां की आंस ! जा ए
कुळ का उजांस ! जा ए—
शेर ज्यूं दकालजे। म्हारो कोल पाळजे।

बाळपणां पहली पगल्यो धूळा की गळियां
यहां रमता रेख पांई होटां री कळियां,
उंठी पग रोपे जठी—
यां गळियां की आंण हठी—
पाछो मत चालजे। म्हारो कोल पाळजे।

दे दे पसीनो थें नें' मेंहनतां ईं मांन दियो
थारी मरदमी न' खेतां ईं वरदान दियो
वळदां की टेक ! जां ए—
ऊंमरां री रेख ! जां ए
रण ईं रुखाळजे। म्हारो कोल पाळजे।

धरती का लाल जां ए—म्हारो कोल पाळजे—
आज विदा की वेळा—आंसू मत ढाळजे॥

क्यूँ नी आवो ए ?

आंगण नी बाजे बीछ्या ए राम,
सायब जी पूछे-"क्यूं नी आवो ए ?"
कस्यां कहूं मुखड़ा सू फूटे नी बोल,
चतुर सुजान कोई समझावो ए।
अलबेला पूछे-"क्यूं नी आवो ए ?"

तन भारी घूमर तो घाली नी जाए,
आवे शरम गोरी बाहर नी आए,
घूंघटे बैठू तो भोली ननदा लड़े
पणघट जाऊं तो जिठानी अड़े
मन मांगे छाने से ना दीज्या राम
छाटी कैसी कोई समझावो ए।
जिठजोला पूछे—"क्यूं नी आवो ए ?"

नीमड़ो की डाळ झूले मचरया
अब सूनो आंगण रहूं नी सकरया,
पिया परदेसां हो तो टूटे पोर
अब सीढ़ रहगी बाकी तलवार
अब रहगी होठां पर हासरा ए राम
भूली रंग गान, कोई समझावो ए।
सदर्शन का पूछे—"क्यूं नी आवो ए ?"

[illegible] दिन [illegible] [illegible] [illegible],
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible],
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible],
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible],
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible],
[illegible] [illegible], कोई [illegible] ए।
[illegible] पूछे—'क्यूं नी आयो ए?"

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible],
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible],
[illegible] [illegible], कोई [illegible] ए।
[illegible] पूछे—'क्यूं नी आयो ए?"

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible],
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible],
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible],
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible],
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible],
मंगल बराण कोई समझायो ए।
मारूड़ा पूछे—"क्यूं नी आयो ए?"

धरती प' पग देतां बदूकां चले,
म्हारो तन वांको शूरापण फळे,
सीखेगो तलवारां सूं पहला बोल,

वारे आवेगो मुण अकडंक्यो ढोल,
आजादी, आचळ, अर पागां को राम,
राखेगो मान, कोई समझावो ए।
रणवंका पूछे "क्यूं नी आवो ए?"

आंगण नी वाजे वीछ्या ए राम,
रगलोभी पूछे—"क्यूं नी आवो ए?"
कस्या कहूं मुखडा मूं फूटे नी बोल,
चतुर सुजान कोई समझावो ए॥

बोलियां को ओलमो हिन्दी नँऽ

सूनां, रूपां, मोत्यां तन शणगार ल्यो,
पण मन में' मुळकावो फूल गुलाब को,
नित नित लड़झड़ लूमे गहणां रूप पऽ
पर कदी क' तो राखो मान गुलाब को ।।

खुद तो चाहो जतनो दरपण देखल्यो,
दूजा निरखेगा क न' या भी देखल्यो,
चाहो ज्यूं गरवो निखराळी चाल पऽ,
निरखे सारो बाग ऊ फूल गुलाब को । पण....

ये गहणा—चुड़ला, चूंपा, नग, नेवरी,
जाणे सबद कठोर तपस्या देवरी,
कदीक हांसो, बोलो प्रीत जतावो तो,
सीखो आंगण मुळक' फूल गुलाब को ।। पण ·

चाहो जतनो केशां मोती सारल्यो,
तारां—वरणो जाळ शीश प धारल्यो,
दूणो जादू आजाव'गो रूप मंऽ
ज्यो जूड़ा में' टांको फूल गुलाब को ।। पण....

महलां राज कचेर्यां बोल गुमान का,
मीठा बोल पणघटा खेत खलाण का,

यां सू बात करो तो चूमो धूळ नैं (वैठा पोळ मंऽ)
फेरूं बोलो झड़ज्या फूल गुलाब को ।। पण ...

पीड़ा दयो छो पीड़ा का उपचार मंऽ
मुळकावो मटकावो उळझ्यों हार मंऽ
ये हीरां का हार, जड़ाऊ बाजरी,
पहरो पण मत भूलों बाग गुलाब को ।। पण ...

हिंदी कै आंगणिये मुंकरांणो जँड़द्यो,
थांबा, ताक झरोखा अर जाळी घड़द्यो,
चाहो जतनो बडो बणावो रावळो,
पण बीचा में' राखो तुलसी थांवळो ।
पण मन में' मुळकावो फूल गुलाब को ।
पण कदीकै तो राखो मान गुलाब को ।।

गीत

सांझे जळायो दिवलो—वायरो बुझाद्यो ए,
आखी रात अंधियारो रहसी के ?

राग छेड़तां ई कोई तार तोड़ दीनो ए,
सदां मूंन अकतारो रहसी के ?

बाबुल क' आंगण' म्हूं गुड़ियां सूं खेली ए,
टूट्योड़ी गुड़ियां नं' एर-एर मेली ए,
घर घर पियर तज आस लेर आई ए,
नुई गुडियां सूं रमसी कद' म्हारी जाई ए,
भाई क' पाळणें' म्हूं बालपणें' खेली ओ,
सूनो आंगण म्हारो रहसी के ? आखी रात....

भायल्यां पहर' म्हारी पचरंग पूमचा,
हंदळोटे' हाल' वां का बाजूबंद लूम का,
म्हारो शणगार सदां पेटी में रह'गो के ?
कूंपलिया को काजळ आंसू में' बह'गो के,
मणग्यारा सूं लियो लड़ लड़ हिंगळू,
गोटो अणगुंथवायो रहसी के ? आखी रात....

स्वागण्या को टोळ पूज' रोगी गणगोर ए,
जाण' कद ईसर बर तोड गया डोर—ए,
हथळेव' दाग म्हार' मेंहदी को लाग्यो ए,

नैणां नही देख्यो पण भरतार वाज्यो ए,
ठोकर कजा की खाय एक बार ढुळ्यो,
जोवन कळश कोरो रहसी के ? आखी रात ...

म्हार' तीजां, गणगौर्यां गावा की हूँस ए,
घूमर रमूं तो म्हार' सासूजी की घूंस ए,
सूनी म्हारी बांह साल' झालो कदी देसी के,
चूड़ला का सोगन कदी कोई देसी के,
देळ पुजा बीरा म्हेंन' सासर' खनाई ओ,
म्हारो चोक कुंवारो रहसी के ? आखी रात ..

बगवार' देवरिया बाध' र' मोठडा,
जेठ सा वरा ठग बैठ' र'गोखडा,
म्हार' पांती भेम कोरा फूट्योडा भाग का
आटा खुन्या ही न' छा पचरंग पाग का,
कुण पहरेगो यो न'—कद निरखू गी म्हूं ए
म्हारी डोड्या हिवारो न होसी के ? आखी रात

बदू दियो राम म्हन' अणनोंध्यो हेत का
कुण प' लुटाऊ म्हारा हिवडा को खेत ए
बरयो ए बन्हैया म्हारा दूध उजळाव गा
बसे दिन बाई म्हारी रात जगाव गा
कोई तो बताओ म्हार पूंगूं कदी आसा ए
आवस को पलवाडा रहसी के ' आखी रात

सांभे, अठायो दिवलो—दायरो कुभाद्दा ए
आखी रात अंधियारो रहसी ए
राम रेहना ही कोई लाव लाव दीना ए
सदा मुंन अंधारो रहसी के ?

ऐ र' दूणो नवज बदाणी छ' दकाल गंगोल्या !
बैरी आग्यो रे ।।

बैठ्यो बैठ्यो पोळ पटेलाई मत साध' रऽ
मां को दूध खून सूं, पसीनां मू चुका द' रऽ
ऐ र' थारी बाट न्हाळ' खेल ए रणखेत गंगोल्या !
बैरी आग्यो रे ।।

बैरी की चिड़ियां थारी शाखाईं खाव' रेऽ
गोकण गम्हान पूंचो पीचो मत राख' रऽ
ऐ र' भारत मां की मोती मांग ई रुखाळ गंगोल्या !
बैरी आग्यो रे ।।

धरती का लेग' हो ए थारी जिन्दगानी रऽ
रोक' मत हाथ, होजा ओदरदानी रऽ
ऐ र' रहगी आवड़ तो फेर धन हो ज्यागो गंगोल्या !
बैरी आग्यो रे ।।

बोराणी को हिगळू बचाणो हो तो जाग रऽ'
भागी भागो बहण को बचाणो हो तो जाग रऽ'
(ऐ र' थारी गायड़ को दूध मत लजाज गंगोल्या ।
ऐ र' बेगा आई ए जगाणो उजाळ गंगोल्या ।।
बैरी आग्यो रे ।।

पधरावणी

नेहरू जी पधार्‌या पांवणां म्हांन' प्यारा लाग' सा !
प्यारा लाग' सा—घणां घणा वा'ला लाग' सा !
जुग जुग जीवो ऊमर म्हांकी थांई लाग' सा !!

नहरां न' चौक पुराय द्‌यो, चांवल पग धोव' सा
बधा को छ' पग पांवड़ो पधरावण होव' स—
नेहरू जी पधार्‌या पांवणां म्हांन' प्यारा लाग' सा !!

चाम्बल छी मद बावळी परवत में' सोई सा,
नेहरू जी को परताप खेतां की चाकर होई सा—
नेहरू जी पधार्‌या पावणां म्हांन प्यारा लाग' सा ।।

मान बढायो महनतां को हिवड़ा नं' दीनों राग,
कोंपळ को दे हीगळू धरती नं' दीनों सुहाग सा—
नेहरू जी पधार्‌या पावणां म्हांन प्यारा लाग' सा ।।

प्यारा लाग' सा घणां घणां व'ला लाग' सा ।
जुग जुग जीवो ऊमर म्हांकी थांई लाग' सा ।। *

---

* कोटा सिंचाई बांध का उद्‌घाटन करने के लिए आये हुए पं० नेहरू के स्वागत में गाया गया गीत ।

छोटा छोटा टावर देखो हूंसा काम कर' रः
पाचां की भड़ जीं क' ऊ जम सूं भी नहीं डर' रः
परवत न काट—समंदर न' पाट—भाई मंगळ गान करां ॥

नंद्यां तळाव सूं नहरां का धोरात्या लहराव
करां सिंचाई, हर्‌यो पूमचो धरती न' पहराव
निवजे'र अन्न—हरसे'र मन्न—मोती सनिहाण भरां।
क' अब तो चेतां भान करां।

(२)

देश पंद्रोड़ा र'—भारत न'—भारत न' भगीरथ नेहरू पायो रः
खाम्बल प' बांध बंधायो रः
बंधा को कवांड़ खुलायो रः
परवत सूं माळ में लायो रः
सम्पत को रेलो आयो रः
उन्नति को गेलो पायो र—करणा ओ रः।

गुण अनपेना र'—आपां—क' आगम में ही गया आई रः
गरदां की महनत मुटराई रः
खाम्बल न पायन भरणाई रः
नहरां की गूंजी गहणाई रः
धरती की गोरम गरणाई रः
भुजबळ सूं मादमी परणाई र'—अनपेना रः !!

भई [illegible] र'—[illegible]
[illegible]
[illegible]

दहेंग्यां जे मचोळां खाव'गी,
मोत्यां की साख उगाव'गी,
हरियाळी हरख मनाव'गी–मरदाना रऽ !!

अर' अन्नदाता र'–पूरब सूं–पूरब सूं पच्छम तांई पाणी पाव'गा ।
पड़ता में पुसब उगावें'गां,
गारा म' सोनो नवजावें'गा,
क्यारां में' केसर बावें'गा,
चोमरूं बाग लगावें'गा,
बरसा की भूख भगावें'गां, अन्नदाता रऽ !

देख राम जी र'–तकदीरां मुट्ठ्यां में' तो महांक' आगी रऽ
चाम्बल अब चाकर होगी रऽ
हळ की चऊ गद्गद् होगी रऽ
झोपड्यां में' रधसध होगी रऽ
गोरड़ी डेगड़' गा' री' रऽ
सांच्या ई आजादी आ' री' र'–आजादी रऽ ।।

देख पछीड़ा र'.....

काजली-तीज

भोळी बाईसा का प्यारा वीर, तीज प' मत आज्यो
सण लियां छ' काजली तीज, तीज प' मत आज्यो-
सायबा मत आज्यो।

म्हन' याद छ' हुंदलोटा घलग्या,
गीतां का बांध बलम खुलग्या,
उर उलझी सतरंग डोर,
पणघटा लटका कर रिया मोर,
मिटी नं, पण माता की पीड़,
खीचर्‌यो उतर मं' कोई चीर,
हिवाळो खाली करवाज्यो-सायबा मत आज्यो ।।

धरती नं चीर धानी ओढ्यो,
मेहो म्हारा आगण ईं धोग्यो,
म्हूं सुणरी' मेघ मल्हार,
हाय ! पण दमना सब शरुगार,
चाटर्‌यो हरियाळी बारूद,
माय को मती लजाज्यो दूध,
स्वाग को चुड़लो उजळाज्यो-सायबा मत आज्यो

गजरा मं' याद हथकड़्यां की,
बीदी मं' ठेर बरछड़्यां की,

बेई हंस हंस जीक' हेल,
छोड्या जनवासा को सेज,
सुगाळी में फांसी की याद,
है म्हारा भगतसिंह आजाद,–
शहीदां की गेल्यां जाज्यो–सायबा मत आज्यो ॥

आजादी का सरदार सजग,
सीमा का पहरादार अडग,
नभ नीड' परवत शिखरा पऽ
म्हारां कवल बरफ की डगरां पऽ
म्हें नें' छोड्या सारा चैन,
गैल में' ब'ठी बछा 'र नैन,
पाग को मान बचा लाज्यो–सायबा मत आज्यो ॥

म्हारी ऊंठी गुम री' तीज पिया,
जठी अजगर का फण फैल रिया,
हेर लाज्यो मिलवा की बार,
नही तो ले मंनाण कटार,
चिता की झाळा चढ जाऊंगी,
तीज को कोल नभा जाऊंगी,
राख को टीको कर जाज्यो–सायबा मत आज्यो ! !

भोळी बाईसा का प्यारा बीर तीज प' मत आज्यो,
खण लिया छ' काजळी तीज–तीज प' मत आज्यो !
सायबा मत आज्यो !

बीड़ो उठाओ

लाल किला में' बीड़ो फिरे छ' कोई उठाओ रे !
देश की धूळ छ' रोळी उठो रे ! टीको लगाओ रे !!
उठो रे बीड़ो उठाओ रे !!

बारूदां भेळी रेत जगावे
केशर फूल्या खेत बुलावे
या छ' पछाण जुझारां की
वे दूध पिवे पण खून चुकावे
माँग' सबूत जवानी, मूंछ्यां पर पाण लगाओ रे ।। उठो रे...

मंदरियो हुँकार उठ्यो रे
कांकड़ हेला मार उठ्यो रे
'एक बराबर होवे सवालख'
गुरुद्वारो दलकार उठ्यो रे,
चूको मती चोहाण, कवाण प'बाण चढ़ाओ रे ।। उठो रे...

खेत कह' करशाण उठो रे
बाध कमर कमठाण उठो रे
फूलां की कोमळ पंखड़ियाँओ !
आज बणो चट्टाण उठो रे,
देश क' खातर खून पसीनां को यज्ञ रचावो रे ।। उठो रे...

माथा सूं मोह लगावे जे पापी,
धन में मन रमावे जे पापी,
सांचा सपूत अंगीरा सूं खेले
फूलां की सेज बिछावे जे पापी,
गळी गळी बलिदाना का मंगळ मेळा मनाओ रे ।। उठो रे....

कोई कळी मुरझा नहिं जावे,
छांटो तिरंगा प' आ नहिं जावे,
जागता रीज्यो कोई भी देश का
पात क' हाथ लगा नहिं पावे,
सीमा प' शेलड़ा गाडो रे, अंगद पाव जमावो रे ।। उठो रे....

दे दे अशीष, विदा देरी जामण,
दोधारो वाध खनादे री कामण,
शूरा चढ़े रणखेतां जरासो
आज गगाजळ लारी कलालण,
थांको भूगोल ताके ऊँई थां इतिहास पढ़ाओ रे ।।
उठो रे बीडो उठाओ रे ।।

छालर

ए म्हारी छालर गाय !
काळ पड़' कळजुग की माया,
तू सतजुग की धाय
कान्ह कुँवर थँनं' दूध पिवायो
तू भूखां मर जाए ।। ऐ म्हारी छालर गाय!

नारद पूछी," बोझ धरा को—
बोलो कुण झेल'गो ?"
सिह नट्या पण तू बोली-" म्हारो
बांठो सुत झेल'गो ।"
जे धरती थँनं' हरी करी वा ही थारा कुळ न खाए ।। ए...

राम दियो थँनं' वचन, धरा
प' नागरबेल चरो रे"
नागरबेल छोड़ नी दीखे,
झूपड़ियां छपरो ए ?
दो'वाहाळा खुद छोड़ चल्या थने पगल्यां शीश नवाए ।। ए...

यो मरुधर ज्यांको जनम भोमक्या
बळद्या रूप रूपाळा
अन्न की खोजाँ बाळद चाली
सूनो करग्या साळा
अम्बर नटताइँ थारो बोझो धरती खुद नट जाए ।। ए...

हालरो

तू सोजा म्हारा लाल हालर दयूं ।
हालर दयूं-थें' नें' हूलर दयूं ।। सोजा...

जाग'गो तो भूख सताय'गी ऐ लाल,
सपनें' मल'गा थें नें दूधां भाती थाल,
आँसूड़ां का मोती भर गागर दयूं ।। सोजा...

मचल्यो न' हुँदळोट' रेशम की डोर,
गोदड़ां की गोदी थें नें काळज्या की कोर,
कहाँ सूं म्हूं चांदणी-सी झालर दयूं ।। सोजा...

कुण दे मचोळा थं नें' कुण गाव' गीत,
कोई भी न' दुखिया का दाँई दड़ मीत,
थपक्या को हेत लुटा अर दयूं ।। सोजा...

पाड़ा ए पड़ोस थें नें' रोता देव' गाळ,
सुण सुण हिवड़ा में' लाग' म्हार' साल,
रूस'गो तो पुचकारी मन भर दयूं ।। सोजा...

सपना के घर जा तू पाजे सुख लाल,
जागता में' कोरी म्हारी पलकां की ढाल
दुख माथ' बोझ हो तो उतार ल्यूं' ।। सोजा...

इन्दरपुरी का सुख निंदरा क' देस,
धरती तो दुखियां क' लेख' परदेस,
मनख जमारो लागे भार ज्यूं ।। सोजा...

हालरो

तू सोजा म्हारा लाल हालर दयूं ।
हालर दयूं-थें' नें' हूलर दयूं ।। सोजा...

जाग'गो तो भूख सताव'गो ऐ लाल,
सपनें' मल'गा थें नें दूधां भाती थाल,
आंसूड़ां का मोती भर गागर दयूं ।। सोजा...

मचल्यो न' हँदळोट' रेशम की डोर,
गोदड़ां की गोदी थें नें काळज्या की कोर,
वहां सूं म्हूं चांदणी-सी झालर दयूं ।। सोजा...

कुण दे मचोळा थं नें' कुण गाव' गीत,
कोई भी न' दुखिया का दाईं दड़ मीत,
थपक्या को हेत लुटा अर दयूं ।। सोजा...

पाड़ा ए पड़ोस थें नें' रोता देव' गाळ,
सुण सुण हिवडा में' लाग' म्हार' साल,
रूस'गो तो पुचकारी मन भर दयूं ।। सोजा...

सपना के घर जा तू पाजे सुख लाल,
जागता में' कोरी म्हारी पलकां की ढाल
दुख माथ' बोझ हो तो उतार ल्यूं' ।। सोजा...

इन्दरपुरी का सुरा निंदरा क' देस,
धरती तो दुखियां क' लेस' परदेस,
मनस जमारो लागे भार ज्यूं ।। सोजा...

दी तेड़, उठ्यो साजग्यो, भटको जदी लगाम,
घोड़ो न खाई ठोकरां होव'गो बुरो काम।

गण गूण अर कुगूण सभी दबग्या रोस मंऽ
यूं बीत गई रात ऊ भटक्यो दो कोस मंऽ।

तड़क' बसन्त पंचमी, सूरज लियां गुलाल
फेंक' छो; पण जुझार क' मन में' घणो मलाल।

पूग्यो न रात में' यूं ही तलवार रह गई,
मुळकातो गयो महला हियें आग रह गई।

सुणता ही राणी दौड़ती पावां में' आ पड़ी,
राजा का हट्या पांव नजर भी उड़ी उड़ी।

समझी नहीं भोळी सती पूजा को थाळ ले,
करवा ज्यो लागी आरती बढ़ग्यो ज्यूं टाळ दे।

पूछी—"कहो हरदौल का भर घाव गया नंऽ
तलवार म्हारी दे'र थां राजी तो हुया नंऽ?"
भोळी सी हंसी ले' र यूं राणी नं' कही छी—
"ई दोष सूं ही ओडछा की नाक रही छी।
तलवार आपकी म्हंनं' दी दोष हो गयो,
लाला नं' मान राखल्यो संतोष हो गयो।
शाही नजर को काकरो, तलवार को धणी,
परजा की पीड़ काळजे हरदौल क' घणी।
हरदौल ई प्राणां सूं भी प्यारो छ' ओड़छो,
म्हार' भी आप दोई कळेजा की कोर छो।।'
ई रोष में' या बात आहुती सी बण गई,
बुद्धि नं' साथ छोड दयो जद आंख तण गई।

दी ऐड़, उठ्यो ताजणो, भटको जदो लगाम,
घोड़ो न खाई ठोकरां होव'गो बुरो काम।

पण गूण अर कुगूण सभी दबग्या रोस मंऽ
यूं बीत गई रात ऊ भटक्यो दो कोस मंऽ।

तड़क' बसन्त पंचमी, सूरज लियां गुलाल
फेंक' छो; पण जुझार क' मन में' घणो मलाल।

पूग्यो न रात में' यूं ही तलवार रह गई,
मुळकातो गयो महलां हिये आग रह गई।

सुणतां ही राणी दौडती पावां में' आ पड़ी,
राजा का हट्या पाँव नजर भी उड़ी उड़ी।

समझी नहीं भोळी सती पूजा को थाळ ले,
करवा ज्यो लागी आरती बढग्यो ज्यूं टाळ दे।

पूछी—"कहो हरदोल का भर घाव गया नऽ
तलवार म्हारी दे'र थां राजी सो हुया नंऽ?"

भोळी सी हसी ले'र यूं राणी नं' कही छी—
"ई दोष सूं ही ओड़छा की नाक रही छी।
तलवार आपकी म्हनं' दी दोष हो गयो,
लाला नं' मान राखल्यो संतोष हो गयो।
शाही नजर को काकरो, तलवार को धणी,
परजा की पीड़ काळजे हरदोल क' घणी।
हरदोल ई प्राणां सं' भी प्यारो छ' ओड़छो,
म्हार' भी [illegible] छो॥'

[illegible] गई,
[illegible] गई।

की पीड़ या देखी न जा सकऽ
पाऊगो मनवा में ना'सकऽ।"

हतभागणी माँ तो वणी रही,
री आंख में' कंकर कणी रही।

ई शीश प'आशीस धरी छो,
घात की तैयारी करी छो।

प्रेम प' सुहाग नें' करी,
जाच तो सीता की नें' करी।

राम की कमजोरी आ गई,
जाई लाक-लाज खा गई।

वां बना व्यभिचारिणी नारी।"

बढ़तो ही जाय्यो राज म' परभाव छ' ऊँको,
कांटो छ' म्हारो गेल को विष आग म' फूंको।

सत की छ परीक्षा करो विश्वास सू पूरी,
राणी या थां की मौत सूं रह ज्यागी अधूरी।'

घण की सी चोट लागगी राणी का शीश पऽ
गश खा'र जा पड़ी; गयो जुझार खीझ कऽ।

कांसा की वेर हो गई हरदौल आ गयो
सुणतां ही गळ' रोज भी राणी क' आगयो।

बांकी सी पाग सिह जस्यो गर्व भाल पऽ
गजराज भी शरमा गयो मतवाळी चाल पऽ।

पेळा सा अंगरखा प' लियां छीटा कसूमल,
नैणां में' छो भोळापणो बाजू में' अतुळ बल।

"भाभी वसन्ती खीर खिलाद्यो मचळ पड्यो,
राणी को पांव कांपतो बाहर निकळ पड्यो।

आग' बढ्यो हरदौल झुक्यो पांव छू लिया,
राणी को बोल कांपग्यो, 'म्हूं खीर छूं लियां।'

मोत्यां ज्यूं रळक जा पड्या जद खीर प' आंसू,
हरदौल चौकग्यो हुई अणहोणी क्यूं थांसूं?
भाभी का इशारा प' धराई उथेल द्यूं,
ब्रह्माण्ड नगळ जाऊं म्हूं पाछो उगेल द्यूं।
भाभी का मां का भेद बतायां नहीं बणऽ
सीता क' लेख' आज लखन का धनुष तणऽ।
जाणी न म्हंन' मां की गोद होव' कांई छऽ।
भाभी न' छोड़ और को विश्वास कांई छऽ।

सत्री छूँ यां की पीड़ या देखी न जा सकऽ
म्हूँ भी न जाण पाऊंगी मलवा में ना'सकऽ।"

"हे लाल! म्हूँ हतभागणी मां तो बणी रही,
पण वहम भरी आग में कंकर बणी रही।

जीं हाथ मूँ ईं शीश प'आशीश धरी छी,
कं मूँ ही पुत्रघात की तैयारी करी छी।

शंका भी पुत्र प्रेम प' सुहाग न' करी,
ईं मूँ भी कठिन जांच तो सीता की न' करी।

दुनिया म' फेर राम की कमजोरी आ गई,
अबला का बळे जाई लाज-लाज रा गई।

पण मां ईं ने दुनियां बना व्यभिचारिणी नारी।
मूँ कह'र छोड़ पाप की राणी न' अपारी।

हरदीन पणां पहणी-"परीक्षा सही पूरी
भाभी का भाभी शीश मूँ रह अपारी अधूरी।

कोहराम गो माच्यो घरा वीरान हो गई,
जाण' बगन्त की श्री विप गा'र गो गई।

खुद मौत परेशान छी क्यूं आ गयो हरदोत
राणो कह' छी "लाल तू मूंढ' तो म्हेंमू बोल।"
फूलां सा हाट सीलग्या महादेव गो'गयो,
इन्सान भी बलिदान मूं भगवान हो गयो—

भगवान हो गयो ॥

दुद्धो

घिर गयो मेवाड छो टिड्डी दळो मुगलान सू,
बढ गयो परताप छो मनमार कर महलांन सू ।

डूंगर्यां घरबार छो, अब सेज छो चट्टान की,
मिल गया तो चार तीदू घोर की मजमाण छो ।

टूटगी भड भायलां की मार सह घमसाण की,
छट गया ज्यूं बादळा रा चोट उगता भाण की ।
तोड़ दारया बाध सारा बेरियां का जाळ का ।

एकलो परताप सूरा लाखहूं छो काळ का ।
राज महलां की लजवाळू राजरांणी लाख छी ।
भेग छूट्या ओदणी तन पं' ब' ताक' लाख छी ।
पूत सो टाबर बचर अब ब' गुळगली कूंपळां
भूल तन म' रया रह्या तोदू सबां की भूपळां,
अडग र' पग एक तो आडावळा को [illegible]
"हू सदा आजाद" सूं परताप ज. म' [illegible] ।

भागतो लडतो भटकतो, हेरतो को आ[illegible]
एक दन परताप को परवार होग्यो [illegible]
पांच दन की भूख ऊं म' आग्यो हो [illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]

फाटग्यो आडावळा-सो हीवड़ा परताप को,
झरण फूट्यो आँसुवाँ को हिचकियाँ नं'दावतो।
रळक आंसू कह रह्या छा मूँछ की मरोड़ सूँ,
नरम पड़जा आण की वाँकी अरी हठ छोड़ तू।

होट कटग्या पण न राणी का दब्या व'सूकड़ा,
लपट लूमी "लाल म्हारा काळज्या का टूकड़ा।"
मर गया राणा'र परगट बाप होग्यो चीख दे,
"कोस ल' मेवाड़ अकबर एक रोटी भीख दे।"

गूंजगी घाटी थरहरी खा गई धरती जदी,
धीरता परताप की रोती न दीखी यूं कदी।

डूबतो सो जाण सूरज—बंस सूरज कांपग्यो,
अब इळा की लाज गी, इकलिंग स्वामी झांकज्यो।

टूटग्यो आडावळा का मोड़ यो परताप-सी,
आंथग्यो एकलिंग जी का जोड़ को परताप-सी।
तण गयो तो रुद्र को ई रूप छो परताप-सी,
र। पड्यो तो करुण-रस की आंख छो परताप-सी।

सांस म' तूफान सो छो आँसुवाँ में' आगसी,
प्हाड़ सू अब प्हाड़ ज्यूं सर फोड़र्‌यो परताप-सी।

झाँई सी जद घाटियां में' गुंजगी "ओ बापजी",
एक दीख्यो भील बाळक हेर र्‌यो छो बाप जो।

रक्त चपचप चो रह्यो छो घाव सामं'साम छो,
हाथ हिवड़' छो'र, होटा 'बापजी' को नाम छो।

झपट राणा न लगायो हिवड' कर थामल्यो,
अटक बोल्या "भील छं" अरफेर "टूटो" नामल्यो।

जीव की आसा न राखो काम कांई बोलतो,
मळक बोल्यो "बापजी ई जीव सूं अणमोल छो।
तीन दन सूं आप आया टापर्‌या भीलांन की,
सोचर्‌या सब भूख लागी होव'गी जोरांन की।
भट्ट रोटी लेर म्हूं भाग्यो यूं म्हारा मोर की,
गेल में' घेरी नं दीनी ताक मामां तीर की।"
रक्त भीजी एक रोटी कांपता हाथांन सूं,
भेंट राणा क' करी नीच' नमी नजरांन सूं।
"जीमल्यो बप्पा, क'भूखा तो लड्यो न' जाव'गो,
न लड्या तो दाग यो मेवाड भी हो जाव'गो,
राखल्यो मरजाद ई आडावळा की बापजी
राखल्यो आजाद म्हां की टापर्‌याई बापजी।"
कह'र हट्टो गिर पड्यो धर शीश राणा क' पगां,

मीना बाजार

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥

[illegible] भूमी मूं लग जाती जलभरी बादळ्यां
अर रणक झणक बरसा राखी पायळा लागती भ
बागां [illegible] पलता लग और केवड़ो
[illegible] छा जाती धरती नभ न मूं प

यूं उमड़ घुमड़ सावण आतो,
मन मन में हूंस जगाव'छो,
ई मौसम में ही अकबर भी,
मीना बजार लगवाव' छो ॥

हो जातो पुरुषां को आवो-
अर जावो बंद बगीचा में
बायरां खुदी मोहो ले दे-
मोहरां-कांटयां पोलां में ॥

एक साल ऊठी मीना बजार,
ऊठी अकबर, बरखा, पाणी ।
बस नई नवेली ही आई—
बनि पृथ्वीराज की कोरांणी ॥

दोई हट की भाजपरां मांही
बोली—"सब चालो महलां में
राजोड़ कंवर की पाट लगा
म्यो थां भी चालो मेला में ॥"

"मांगी चाहै हूं" इकबाणी
बोली इकतावल की बेटी
सब हंस कर बोली "सब सुन लो
थां कंवर कंवर जी क' बेटी ॥"

जाकर देख्यो मीना बजार
सैंचन्दण मचर्‌यो छो सारऽ
रंगीन रोशनी कह री छी–
'रात का अंधेरा तू जा रऽ'।।

चकरागी या भोळी माळी—
रजपूतण इकसार बजारां मेंऽ
पापी की काळी आंख पड़ी,
ज्यो छुपी महल का बारा मंऽ ।।

दौड़ी एक दासी महलां मूं
बोली-"क्यूं आप कठो डुलग्या ?
सब राण्यां उठी जा पूगी
व' शीशमहल का पट खुलग्या ।।

सब भीतर जाकर बैठ गई
पण आप उठी न' न'पाया
म्हूं हेर फरी ज्यारूं आडी
अर आप नजर मं' अब आया ।"

यूं बातां करती बहकाती
वा भूलभुलैयां मं' लेगी
निष्पाप दूध की धारा ईं
वा कपटण भंगराती लेगी ।।

राणी सहमी सी चाल' छी, धीरां धीरां डरती डरती,
ज्यूं हरणी जाव' जाळी की, मन मं' शंका करती करती ।।

महलां की चकफेरी मं' गी तो नीच खड़ो सामं' दीख्यो,
ऊंडो ऊंडो सो हांस' छो ऊ कामी मन्शा मं' भीज्यो ।।

"मीना बजार में पुरषां को
आवो जावो चालू क्यूं छ ?
यो सीधो आर्यो छ कं मूं
कह द' झांक' सामो क्यूं छ ?"
पण पाछ' कोई न' बोलो
मुड कर झांकी आ बहम गयो।
"बांदी दे गई दगो दुर्गा।

रक्षा कर नहिं तो धर्म गयो।"
पामी गुस्सा को हाथ बढ्यो,
एक बार मुकुट प' फिर आगऽ
हो गई ज्वाळी टेक, जर्यां
पग नीच' मूं धरती भागऽ॥

ऊं दन जागी प' औरत की
दुनिया में बतानी लायक छऽ
'कु यहा अबेली अबला हूं
मामा प उठो आगन छऽ॥

आजू की लायक पांती मूं
इज्जत की खोज लगाया ह,
अबला बाग गाजू भीम

ज्यो ई दन मेल' बैठ री छो,
झट हाथ कटारी प' पूग्यो,
छी लाल पाणी प' बज्रपात
पट बीट कटारी को टूट्यो ॥

छाती प' तो गहरण काळ
ज्यूं लपलप जीभ हिलाय' छो
"कामी कुत्ता की ताकत पड
सत्ती की गत दगाय'छो ॥"

सिंहणी गर्जना कर बोली—
"क्यूं नागण थें'नें ठुकराई ?
अणदागल अशयारां की बेटी-
की देख खून की गरमाई।

हो गयो अन्त हिम्मत को-"मां !
गऊ है" कर जोड्यां कही नीच
राजां का राजा न अबला सूं
कैं दन मांगी प्राण भीख ॥

"गऊ ?" धत्तजा ! माफ कर्‌यो कद सिंह तुणकल्यां खाव'छ
ओछापण ओछां को ठेको, असली न उठो चत्त लाव छ ॥
पण भूल कदी मीना बजार लगवावा की फिर मत करजे,
तू जस्यां म्हें ई मां कहर्‌यो छ हर परनारी ई मां कहजे।"
अधरां में अटक्यो जीव, फिर्‌यो. पत्थर ज्यूं शीश हिल्यो 'हां' मंड
फिर चरणां में'माथो धरद्‌यो टप टप आसू झरग्या वा मंड ॥
गदगद् धरती माता होगी सब देवि देवता हरख उठ्या
सत्ती का पगल्या धोवाई बादळा रमांझम बरस उठ्या
बरस उठया ॥

भील-भीलणी

पुरुष : [illegible] बो साथीड़ो बळवान—भीलराजो [illegible] बो ।

नारी : [illegible] मेरा [illegible] समान—भीलराणी [illegible] बो ।

नारी : [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible],

पुरुष : [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible],
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]...

पुरुष : [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible],

नारी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible],
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]—[illegible]

नारी : [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

पुरुष : [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

नारी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

पुरुष : [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]—[illegible]

पुरुष : बाड़्यां क' गोड़' म्हारो म्हूवो दन रात,

नारी : तीर थारा बिजळ्यां गूँ कर' नत बात,
कर' याद तारा गू पाषाण—भील राजो

नारी : पाड़्यां की अंधेरी ब'ट्यां न्हाळ्' म्हारी बाट,

पुरुष : करणां की लेरा नाच' ता ता थिन थाट,
बायरा में' गूंज' थारा गान—भील राणी

पुरुष : ओठूँ र' बदन प' मरदमी को तेज,

नारी : ताती मेळी डूंगर्यां आणन्दकारी सेज,
शम्भू पारवती को मिलाण—भील राजो

नारी : धनुष तण' र' म्हारा भंवरा नं' देख,

पुरुष : सीख' म्हारा तीर थारा नजरां की टेक,
म्हारो बळ थारी मुसकान—भील राणी

पुरुष : म्हूं शेर को साथीड़ो बळवान भीलराजो डूंगर को

नारी : म्हूं थारी लेरा छावळी समान—भील राणी डूंगर की

पुरुष : थार' घूंघटियो चूनर को,
थार' कोड्यां की खुगाळी—बड़गांव की बणज्यारी ॥

पुरुष : चांदी सी पांडू लायो,

स्त्री : गीता म' जादू लायो,
अर' लाखों को बोपारी—बड़गांव को बणज्यारो ॥

स्त्री : ल्यो मोत्या की लड़ सांची,

पुरुष : थारी मँहदी घणी राची,
तू नखराळी बोपारण—बड़गांव की बणज्यारी ॥

पुरुष : यो चारस को सो जोड़ो,

स्त्री : छोड़ो जी पल्लो छोड़ो,
तू छणगाळो छ' वालम—बड़गांव को बणज्यारो ॥

स्त्री : थँ' नँ' कब तक कोई वरजऽ

पुरुष : थँ नँ' चांद सूरज भी नरखऽ
म्हूं दिवलो तू दीवाळी बड़गांव की बणज्यारी ॥

दोनों : ब'ळां की बाळद लायो बड़गांव को बणज्यारो
शणगारी डावो लाई बड़गांव की बणज्यारी ॥

अणबाँच्या आँखर

हाड़ौती गीतों का संकलन

४९४
काव्य

रघुराजसिंह हाड़ा

अर्चना प्रकाशन
अजमेर १९७०